ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 5

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था सम्पन्न करने के बारे में यह पाँचवाँ लेख है। हम सब जानते हैं कि यह विश्व विद्यालय एक प्रशिक्षण केन्द्र भी है जहाँ भविष्य के विश्व कारोबार के लिए निमित्त बनने वाले सौभाग्यशाली भाई-बहनों को परमात्मा द्वारा पढ़ाया जाता है।

इसी संदर्भ में एक बात बहुत ज़रूरी है कि जो इस प्रकार के कारोबार में निमित्त बनते हैं उनके लिए परमात्मा ने बताया है कि उन्हें तीन सर्टिफिकेट लेने आवश्यक हैं – स्व-पसंद, लोक पसंद और प्रभु पसंद। लोकपसंद बनना बहुत ज़रूरी है क्योंकि यहां पर स्वयं में यह संस्कार भरेंगे तो उसी आधार पर भविष्य कारोबार हमारे हाथ में होगा। लोकपसंद के बारे में गायन है, 'राम राजा, राम प्रजा.. बसे नगरी... जिये दाता धर्म का उपकार है...' अर्थात् वहां पर जो विश्वमहाराजा बनेंगे वे इतने लोकपसंद होंगे कि सारी प्रजा राजा को अपने परिवार के सदस्य के रूप में समझेगी और राजा के लिए भी प्रजा अपने परिवार की भाँति होगी। वह प्रजा का बहुत ख्याल रखेगा। जैसे हम यहाँ संगमयुग में कहते हैं कि मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा वैसे ही सतयुग में प्रजा भी राजा के लिए यही समझेगी कि मेरा राजा, प्यारा राजा, मीठा राजा। वहाँ राजा, प्रजा के हर कार्य में पूर्ण रूप से सहयोगी रहेगा। द्वापरयुग में भी राजा विक्रमादित्य का गायन था कि वह परदु:खभंजन था और प्रजा की सभी समस्याओं एवं दु:ख दूर करने में मददगार बनता था। ऐसे ही कई राजायें वेष बदलकर रात को अपने राज्य में घूमते थे ताकि उनको प्रजा के सुख-दु:ख के बारे में जानकारी मिले और उसी अनुसार वे प्रजा के हित के लिए कार्य कर सकें। राजा और उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता प्रजा की रक्षा के लिए कार्य करते थे और इसी कारण प्रजा सुख-शांति से अपना जीवन व्यतीत कर पाती थी। इसलिए शास्त्रों में गायन है कि प्रजा अपने राजा को पिता समान मानकर उनका सम्मान करती थी।

महाकवि कालीदास ने रघुवंश में बहुत ही सुन्दर रीति से रघुवंश के राजाओं की महिमा करते हुए बताया है कि रघुवंश के राजा अपनी प्रजा से किसी भी प्रकार का कर (Tax) नहीं लेते थे परंतु प्रजाजन स्वेच्छा से अपना बचा हुआ अधिक धन राजकोष में जमा करते थे और कृषि उत्पाद राजभण्डारे में जमा करते थे। इसी प्रकार जब राजकोष भरपूर (overflow) हो जाता था तब रघुराजा ऐसा एलान कर देता था कि जिसको जितना धन चाहिए वह उतना राजकोष से लेकर जाए।

सतयुगी श्रेष्ठ दुनिया के राज्यकारोबार के बारे में गायन है कि वहां के विश्व महाराजा श्री लक्ष्मी-श्री नारायण थे जिनकी हम आज भी मंदिरो में पूजा करते हैं अर्थात् प्रजा का राजा के प्रति बहुत अधिक पूज्य भाव था। आदर्श राज्यव्यवस्था में यह ज़रूरी है कि राजा प्रजा का प्रिय हो अर्थात् लोकपसंद हो।

आज के समय में दुनिया में चुनाव होते हैं और ये चुनाव कई जगह 4 वर्ष के बाद और कई जगह 5 वर्ष के बाद होते हैं। आज गद्दी पर कोई है तो कल कोई और होता है और इसलिए कारोबार ठीक रीति से नहीं होता। चुनाव से पहले एक पार्टी के लोग दूसरी पार्टी के लोगों के लिए अभद्र व अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं और कुप्रचार करते हैं और 25 से 40 प्रतिशत नेता ऐसे होते हैं जिन पर कई कोर्ट केस आदि चल रहे होते हैं। तो आम आदमी भी सोच में पड़ जाता है कि हमारे नेता या राज्यकारोबारी ऐसे हैं जो असभ्य भाषा बोलते हैं और

गलत कार्य करते हैं तो ऐसे लोगों को हम अपना नेता कैसे बनायें। ऐसे में मैं एक बात बताना चाहता हूँ, मुम्बई में हमारे सेवाकेन्द्र पर एक पुलिस अफसर आते थे। उन्होंने बताया कि हमारी जेल में एक नेताजी थे जिन्हें जेल में रखने का कोर्ट का ऑर्डर था। उन नेताजी ने जेल से ही चुनाव लड़ा और वे जीतकर विधायक बन गये तब इस पुलिस अफसर को बड़ी दुविधा हुई कि कल तक जो हमारी जेल में थे और हमें सलाम करते थे, वे आज हमारे विधायक बन गये और इसलिए हमें उनको सलाम करना पड़ता है। ये वर्तमान समय की विडम्बना है।

सतयुगी दुनिया का कारोबार इस प्रकार का नहीं होगा, इसे समझने के लिए हमें परमात्मा का समाजवाद समझाना पड़ेगा। आज की दुनिया के समाजवाद में चुनाव होता है और जिसे बहुमत प्राप्त होता है वह राज्य करता है। परमात्मा के चुनाव का कारोबार संगमयुग पर होता है। यहाँ परमात्मा सबको एक जैसा ईश्वरीय ज्ञान देते, राजयोग सिखाते हैं और कहते हैं कि आप स्वयं अपने भाग्य के विधाता हैं, मैं आपका भाग्य नहीं बनाता हूँ, आप अपने पुरुषार्थ के आधार पर स्वयं अपना भाग्य बनाते हो। आपका भाग्य न कोई बना सकता है और न कोई बिगाड़ सकता है अर्थात् शिवबाबा सभी को भविष्य में श्रेष्ठ राज्य पद प्राप्त करने की गोल्डन लॉटरी देते हैं। संगमयुग एक चुनाव क्षेत्र है जहाँ पर हम अपने पुरुषार्थ के आधार पर भविष्य राज्य के अधिकारी बनते हैं इसलिए शिवबाबा ने कहा है कि 'जो करेगा सो पायेगा।' हम सभी ब्रह्मावत्सों को यह ज्ञान शिवबाबा ने दिया है परंतु फिर भी हम अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी में और उसकी समस्याओं में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि भविष्य के लिए अपना श्रेष्ठ भाग्य बना ही नहीं पाते। एक बार साकार बाबा ने सभी बच्चों को यही संदेश दिया कि बच्चे, अगर आपके पास अपने परिवार की पालना के लिए पर्याप्त धन है तो विशेष धन की प्राप्ति का पुरुषार्थ न करते हुए ईश्वरीय सेवा में लगकर अपने भविष्य श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करने का पुरुषार्थ करो।

एक बार जब मैं मधुबन में था तो ब्रह्मा बाबा ने कहा कि आज अगर कोई बच्चा यह पूछे कि आज अगर मेरा शरीर छूटे तो मेरा भविष्य में क्या पद होगा तो बाबा बता देगा। तो मैंने बाबा से कहा कि बाबा आज तो आपके पास बहुत लम्बी लाइन लग जायेगी। तो बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, बाबा के पास कोई भी नहीं आयेगा क्योंकि हरेक अपने वर्तमान पुरुषार्थ और स्थिति के अनुसार जानते हैं कि उनका क्या पद हो सकता है। हरेक को अपने स्वभाव-संस्कार का बंधन या अन्य कोई न कोई बंधन है जिसकी मजबूरी के चलते चाहते हुए भी सभी श्रेष्ठ भविष्य पद को प्राप्त करने का पुरुषार्थ नहीं कर सकते। अंत में सभी को यह महसूस होगा कि संगमयुग पर मुझे इतना श्रेष्ठ अवसर मिला परंतु मैं पुरुषार्थ नहीं कर सका इसलिए श्रेष्ठ पद प्राप्त नहीं कर सका। इसी कारण सतयुग में राजा के प्रति प्रजा के मन में ईर्ष्या या द्वेष भावना नहीं होगी तथा राजा और प्रजा का आपस में सम्मान का भाव होगा।

यह परस्पर सम्मान भाव एवं समानता की भावना हमारे प्यारे बाबा, प्यारी मातेश्वरी जी और दादी प्रकाशमणि जी ने हम सभी में पैदा की जिस कारण इस विश्व विद्यालय ने 77 वर्ष पूर्ण किये। मैंने ज्ञानामृत में एक बार एक हँसी की बात बताई थी कि अगर अपने यहाँ भी चुनाव किया जाये और इस चुनाव में एक ओर दादी प्रकाशमणि जी और दूसरी ओर मैं खड़ा रहूँ तो सभी के मत (Vote) केवल दादी प्रकाशमणि जी को ही जायेंगे यहाँ तक कि मेरा खुद का भी मत मैं उनको ही दूँगा। आज के कम्युनिस्ट देशों में केवल एक ही प्रतिनिधि खड़ा रहता है और सभी उस एक प्रतिनिधि को अपना मत देते हैं और घोषित किया जाता है कि वह

प्रतिनिधि निर्विरोध चुनकर आया। परंतु बाबा के यज्ञ में ऐसा नहीं है, दादी प्रकाशमणि जी अगर सौ प्रतिशत मतों से निर्विरोध चुनकर आती हैं तो इसका अर्थ है कि लोगों ने दादी जी की लोकप्रियता और गुणों के आधार पर खुशी से उन्हें अपना वोट दिया है। यह बात सिद्ध करती है कि हमारा श्रेष्ठ भविष्य आज के वर्तमान के आधार पर होता है। हमारे बाबा, मम्मा और दादियाँ इतने लोकपसंद हैं कि हम लोग अपने आप उन्हें अपने भविष्य का राज्यकारोबार सौंप देंगे।

इसी प्रकार से विश्व के राज्यकारोबार में जो भी निमित्त बनते हैं, उनमें एक विशेषता होती है जिसे मैनेजमेन्ट गुरु लोगों ने कहा है 'रचनात्मक होना' अर्थात् वे सदा अपने साथियों को किसी ना किसी विशेष रचनात्मक कार्य में व्यस्त करके रखते हैं। ऐसे लोग सदा ही अपने साथियों के उत्कर्ष के लिए प्रयासरत रहते हैं तथा कारोबार को सदा आगे बढ़ाते रहते हैं। इस प्रकार उनका कारोबार इतना सुन्दर रीति से चलता है कि उनके साथियों में कभी भी आलस्य और अलबेलापन नहीं आता है। दु:ख के समय भी उनका ऐसा व्यवहार होता है कि सामने वाले के मन में दु:ख की भावना नहीं आ पाती। जब मातेश्वरी जी ने अपना पुराना शरीर त्याग किया तब हम उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार करके वापस आये और ब्रह्मा बाबा से मिले। हमारे शोकमग्न चेहरे देखकर बाबा ने हमसे पूछा कि बच्चे क्या आप शोक मनाने आये हो? आपकी मम्मा तो श्री लक्ष्मी बनने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर श्रेष्ठ पद की अधिकारी बन गई तो अब आप उनके लिए शोक क्यों मना रहे हो? फिर बाबा ने हवाई महल में, जहाँ मेहमान थे, वह खाली करवाया और आई हुई टीचर्स बहनों के लिए तीन दिन का राजयोग शिविर रखा जिससे उनका शोक दूर हो गया। इसी प्रकार बाबा ने नई-नई सेवा की विधियों से बच्चों को अनेक सेवाओं के निमित्त बनाया। बाबा बच्चों को सदा ही नई-नई सेवाओं में व्यस्त रखकर उमंग-उत्साह भरते थे।

नवम्बर 1968 में मधुबन में प्यारे ब्रह्मा बाबा के मार्गदर्शन में वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट बनाने का तय हुआ तो उसका समाचार मैं आदरणीय भ्राता जगदीश जी को लिख रहा था। तभी बाबा वहाँ पहुँचे और उन्होंने मुझसे पूछा कि बच्चे, क्या कर रहे हो? मैंने कहा, बाबा, वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट बनाने का जो तय हुआ है, मैं उसका समाचार भ्राता जगदीश जी को लिख रहा हूँ। बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, आप यह काम छोड़ दो, बाबा खुद उनको यह समाचार देगा। आप तो मुम्बई जाओ और ट्रस्ट को रजिस्टर्ड करने का कारोबार करो। बाबा की श्रीमत अनुसार आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी और मैं मुम्बई गये। जब यह कारोबार चल रहा था तो प्यारे बाबा हमें रोज इसके बारे में शिक्षा देते रहे और हम उसी अनुसार ट्रस्ट का संचालन करते रहे। इस प्रकार दिनांक 16 जनवरी, 1969 को वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन हुआ। बाबा ने मुझे अहमदाबाद भेजा और कहा कि नक्की लेक के पास बूँदी कॉटेज है, उसकी बिक्री हो रही है, आप अहमदाबाद जाकर उसका सौदा करो। अहमदाबाद जाकर मैंने बाबा को समाचार दिया कि बाबा इस मकान का 95% कारोबार हो गया है और केवल 1/2 घंटे का काम रह गया है परंतु मकान मालिक कहता कि उस मकान की रजिस्ट्री 7-8 दिन के बाद ही करेंगे तो मैंने बाबा से पूछा कि क्या मैं अभी आबू आऊँ या बड़ौदा जाऊँ जहाँ नई प्रदर्शनी का कार्य चल रहा है? बाबा ने कहा, बच्चे आप बड़ौदा जाओ। परंतु दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे आबू आने का निमन्त्रण दिया। मैं 19 जनवरी को मधुबन में सुबह 10 बजे पहुँचा। बाबा के अव्यक्त होने के बाद मधुबन में बाहर से आने वाला पहला भाई मैं ही

था। फिर बाबा के अंतिम संस्कार आदि के लिए मैं निमित्त बना।

इस प्रकार से बाबा सदा ही ईश्वरीय सेवा में स्वयं भी तत्पर रहे और औरों में भी उमंग-उत्साह भरते रहे। सतयुग में भी राजायें अनेक प्रकार की प्रेरणायें और उमंग-उत्साह अपनी प्रजा में भरते हुए उन्हें किसी न किसी रचनात्मक कार्य में व्यस्त रखेंगे और प्रजा भी खुशी से अपना जीवन व्यतीत करेगी। अपनी प्रजा को रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखने की ज़िम्मेदारी राजाओं की होगी और भविष्य के लिए यह संस्कार हमें अभी ही संगमयुग में भरने हैं।

आज के समय में नये-नये कानून बनाते हैं, पाँच वर्षीय योजनायें बनाते हैं जिनका पूर्णरूपेण पालन भी नहीं हो पाता है। सतयुग में नये-नये कानून तो नहीं परंतु नये-नये कार्यक्रम बनते रहेंगे जिससे सभी के जीवन में सदा उमंग-उत्साह बना रहेगा। इस प्रकार से भविष्य राजकारोबार करने वाले लोकपसंद भी हों तो रचनात्मक कार्य करने वाले भी हों और साथ ही सभी के जीवन में उमंग-उत्साह लाने वाले भी हों। ❖

मोह का महल ढहेगा ही

– ब्रह्माकुमारी राजरानी, इलाहाबाद (उ.प्र.)

एक सच्ची घटना है कि एक विद्वान महामण्डलेश्वर थे। उनकी अभिलाषा थी गंगा किनारे आश्रम बनवाने की। कई वर्षों की चिन्ता और चेष्टा के परिणामस्वरूप धन एकत्रित हुआ, भूमि ली गई और भव्य भवन बनने लगा। भवन के गृह-प्रवेश का भण्डारा बड़े उत्साह से हुआ, सैकड़ों साधुओं ने भोजन किया। भंडारे की झूठी पत्तलें अभी फेंकी नहीं जा सकी थी, चूल्हे की अग्नि अभी बुझी नहीं थी कि स्वामी जी का परलोक वास हो गया। यह कोई एक घटना हो, ऐसी बात नहीं है, ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। किसी ने ठीक कहा है,

कौड़ी-कौड़ी महल बनाया, लोग कहें घर मेरा।
ना घर मेरा, ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा।।

जिसे हम अपना भवन कहते हैं, क्या वह केवल हमारा ही है? जितनी आसक्ति, जितनी ममता से हम उसे अपना मानते हैं, उतनी ही आसक्ति, उतनी ही ममता उसमें कई औरों की भी है, क्या हम यह जानते हैं? लाखों चींटियाँ, गणना से बाहर मक्खियाँ, मच्छर और दूसरे छोटे कीड़े, सहस्त्रों चूहे, सैकड़ों मकड़ियाँ, दर्जनों छिपकलियाँ, कुछ पक्षी और पतंगे और ऐसे ही दूसरे प्राणी जिन्हें हम जानते तक नहीं, उनका ममत्व भी तो उसी कोटि का है जिस कोटि का हमारा।

मकान या महल – दोनों की गति एक ही है। बड़ी लालसा से, बड़े परिश्रम से उसका निर्माण हुआ। उसकी साज-सज्जा हुई लेकिन एक भूकम्प का हलका-सा...। आज तो कहीं भी, कभी भी किसी मनुष्य की पैशाचिकता ही भूकम्प से भी अधिक प्रलय कर सकती है। महानाश के मेघ विश्व के भाग्याकाश पर घिरते जा रहे हैं। वायुयानों से कब दारुण अग्नि-वर्षा प्रारम्भ हो जाए, कोई नहीं जानता। किसी अस्त्र का एक आघात, क्या रूप होगा इन भवनों और महलों का? काल अपना कार्य बन्द नहीं कर देगा। जो बना है, नष्ट होगा ही। महल का परिणाम है खण्डहर, वह खण्डहर जिसे देखकर मनुष्य डर जाता है। रात्रि तो दूर, जहाँ दिन में जाते भी सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य का मोह उससे महल बनवाता है और महल खंडहर बनेगा, यह निश्चित है। जीवन में हम मोह का विस्तार करते हैं; धन, जन, मान, अधिकार, भूमि जोड़ते हैं। ये सब भी और इनके प्रति मोह भी नष्ट होगा ही, मोह का महल ढहेगा ही। ❖